479 (P)
H (102)
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1370/10/1

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 479

19-1

गौड़ ग्रन्थमाला का १५ पुष्प

—*ॐ*—

खूनीं नज़ारा

उर्फ

यादगारे वतन

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 193

संग्रहीत लेखक व प्रकाशक—
पं० शिवशंकर लाल देवीप्रसाद
जनरलगंज, कानपुर।

वगैर लेखक के मुहरकी पुस्तक चोरी की समझी जावेगी। मूल्य)॥

पं० गिरिधरगोपालशुक्ल भारत प्रिंटिंग प्रेस कानपुर

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 479
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
D 497 K

झण्डा गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति बरसाने वाला। प्रेम सुधा सरसाने वाला॥
वीरों को हरषाने वाला। मातृ भूमि का तनमन सारा॥
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में। लखकर बढ़े जोश क्षण २ में॥
कांपे शत्रु देखकर मन में। मिट जावे भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झण्डेके नीचे निर्भय। लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय॥
बोलो भारत माता की जय। स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ। देश धर्म पर बलि २ जाओ॥
एक साथ सब मिल कर गाओ। प्यारा भारत देश हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पावे। चाहे जान भले ही जावे॥
बिश्व विजय करके दिखलावे। तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

खूनी नजारा

उर्फ

यादगारे वतन

लाखों कोशिश तुम भी कर लो,
मारो अब तीर निशाने में ॥
जालिम कुछ शर्म नहीं आती।
तुमको ताकत दिखलाने में ॥
झंडे से दिल घबराया है।
तब अत्याचार मचाया है ॥
तुम दमन करो हम सहते हैं।
क्या रक्खा खून बहाने में ॥
डायर ने नाम कमाया था।
दरियाये खून बहाया था ॥

सीना खोले रहते थे खड़े।
पंजाबी शीश कटाने में॥
मैं अत्याचार सुनाता हूं।
पाहले की याद दिलाता हूं॥
टुक नज़र उठा कर तुम देखो।
जो लिखता हूं परवाने में॥
ईसा के समय थी रजधानी।
करती थी अपनी मन मानी॥
नृप पतित व पापी दुष्ट हुये।
अब तक है नाम जमाने में॥
ईसा को पकड़ बुलाया था।
फिर दस्त औ पा कसवाया था॥
तलुओं में कील ठुका करके।
क़ातिल थे खून बहाने में॥

गुरु अर्जुन देवक किस्सा है।
यह निश्चर न्याय का हिस्सा है॥
फिर तेल गरम करवा करके।
आई नहिं शरम भुनाने में॥
तांतिया भील था शेरोनर।
जिसका किस्सा अब तक ज़ाहिर॥
दिलमें कुछ खौफ़ खुदा क नहीं।
आया सूली चढ़वाने में॥
सन् चौदह इकतिस तीस मई।
थी देवी जोन कि जान गई॥
जिन्दा देवी को भस्म किया।
कायम थे धर्म डिगाने में॥
भारत की सीता सती हुई।
जो जल भुन सीधे स्वर्ग गई॥

ऐसे जालिम से मौत डरे।
क्या दुनियां से ले जाने में ॥
थे खुदी राम भी शेरोबबर।
अपनी मां का इकला नाहर ॥
फांसी दे प्राण लिये तुमने।
क्या चूके यवज चुकाने में ॥
सत्तावन सन् जो जाहिर है।
पेशावर यू० पी० बाहर है।
निर्दयता से तोपें घाली।
गर्दन थे वीर कटाने में ॥
मुर्दे मर कर हो जाते थे।
पा धुआं खण्ड ठुकराते थे ॥
फिर खंड धुआं से उड़ते थे।
कातिल थे चैन उड़ाने में ॥

अब नानाराव का किस्सा लो।
पातकी पखंडी चित कुछ दो ॥
जबरन शासन करना चाहा।
फिर छिप गये भेष जनाने में ॥
नाना की पुत्री शान्ति मई।
देखो कैसे परलोक गई ॥
मैंना बाइ को जीते जी।
हत्यारे लगे चुनाने में ॥
ईटों की नींव जमाई थी।
उसमें मैंना पौढ़ाई थी ॥
इस तरह तड़प कर सती मरी।
थर्रावे कलम बताने में ॥
यह काफिर जाति कहाती थी ॥
रोजाना खून बहाती थी ॥

जो सजा यहां दी जाती थी अब तक नहिं सुनी जमाने में ॥
जो पकड़ बुलाया जाता था जिन्दा गड़वाया जाता था ॥
कुत्ते खूंख्वार बुलाकर के लगते जल्लाद नुचाने में ॥
कितने इस भूमीसे बीर गये अफसोस बहुत रणधीर गये ॥
गुरु नानक गोविन्दसिंह सुनो बाकी है नाम जमाने में ॥
नानक से चक्की पिसवाई काफी थी सख्ती दिखलाई ॥
कोई दिल में सोचे अपने क्या कसर थी पाप कमाने में ॥
करतार तरुण थे गोविन्दसिंह श्री बी जी पिंगल वतनसिंह ॥
श्री काशीराम भी जाहिर थे प्रण पूरा कर दिखलाने में ॥
बन्ता बलवन्ता जुगलसिंह केहर मथुरा औ अरुणसिंह ॥
बलिवेदी पर चढ़कर मरे लिक्खा इतिहास पुरानों में ॥
रामसिंह हरनामसिंह श्री सोहनलाल औ नन्दसिंह ॥
अन्याइ राज के जुल्म लिखे थे अब तक बन्द खजाने में ॥
मेरी ने फांसी पाई थी गर्दन बाखुशी कटाई थी ॥
यह हरगिज कलम न मानेगी अब सच्चा हाल सुनाने में ॥
जब ऐसे न्याईधारी थे अधिकारी अत्याचारी थे ॥
तब कैसे दर्द भुलावें हम डर खावें क्या लिख जाने में ॥
लिखने में खौफ न खाना है शिवशंकर साफ सुनाना है ॥
पिछले दिन आज दिखाते हैं हाजिर वह खून बहाने में ॥

योगी के बरण में हम निकले ऐ अहले बतन तुम शादरहो ॥
हम जान वतन पर देने को निकले हैं तुम आबाद रहो ॥
घर बार सभी छोड़ा हमने की है उल्फ़त आजादी की ॥
हम रहें २ न रहें तुमतो ऐ अहले वतन आजाद रहो ॥
आजादी हम पर रोती है मुंह अश्कों से हसरत धोती है ॥
जब बच्चे मांओं से कहते हैं हम हाकिं नहों तुम शाद रहो ॥
तहरीक कि खुद आजादी की क्यों राह हमें दिखलाती है ॥
अब आया वक्त रिहाई का आज़ाद रहो आजाद रहो ॥

दूसरी कविता

ऐ मादरे हिन्द गमगीन न हो दिन अच्छे आने वाले हैं ॥
आज़ादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥
मां तुझको जिन ज़ल्लादों ने दी है तकलीफ जईफी में ॥
मायूस न हो मगरूरों को हम मजा चखाने वाले हैं ॥
बेचैन हैं औ बे बस हैं हम गोकुञ्ज कफस के कैदी हैं ॥
वे वस हैं लाख मगर माता हम आफत के पर काले हैं ॥
मेरी रूह को करना कैद कतल इमकान से इनके बाहर है ॥
आजाद हैं अपना दिल शैदा दो लाख ज़बां में ताले हैं ॥
यहां आये मुसाफिर बड़े २ मगरूर फिर आखिर चले गये ॥
ये भी चन्द रोज में परदेशी लन्दन को जाने वाले ॥

नोटः- यह कवितायें श्रीमतीश्याम कुमारी नेहरू द्वारा
ता० ६-८-३० को फूलबाग में पढ़ी गई थीं।

❀ वक्त बिताने को ❀

मेरा मन माता मचल रहा, तुझ को आज़ाद बनाने को।
कहतीहै आत्मा उठो चलो, अब आत्मिक खड्ग चलानेको॥
संग्राम यहां है आत्मा से, है बिनय यही परमात्मा से।
सबकी आत्मा में देवी हो, हाज़िर हो शीश कटाने को॥
यह स्वप्न रूप दुनिया सारी क्यों करें भला फ़िर लहचारी।
वह हाज़िर जेल पठाने में, तत्पर हम कष्ट उठाने को॥
अन्यायी शासन में रहना, मेहनत करना भूखों मरना।
ज़र दौलत लेकर दीन किया, अब हाज़िर खून बहाने को॥
जब तुम्हारे न्याय बने, अन्याई हम अन्याय सने।
हम अपने हक को लेलेंगे, पूछो तुम जाय ज़माने को॥
बैठक है राउनटेबिल की, अब नज़र हो गांधी के बिलकी।
हरगिज़ गांधी राज़ी है नहीं, इंगलैण्ड तुम्हारे जाने को॥
मिस्टर जैकर सप्रू आये, देखें क्या गुञ्चे खिलवाये॥
मिल आये राष्ट्रपती से, वह बाकी है हाल सुनाने को।
पोशीदा कार रवाई है, गांधी ने इल्म पढ़ाई है॥
देखें क्या शर्तें पूरी हों भारत आज़ाद बनने को।
हम तो एक बीर पुजारी हैं, अपने हक के अधिकारी हैं॥

तुम शौकसे साहब कत्ल करो, हम हाजिर सीस कटाने को।
शिव शंकर क्या दहलाना है, आजादी पर मर जाना है॥
बच्चा २ तय्यार यहां है जेल में वक्त बिताने को॥

इंगलैंड को जाने वाले हैं।

बीरो तुम प्रण पर अटल रहो, दिन अच्छे आने वाले हैं।
जो सजर बाग़ के सूखे थे, गुञ्चे खिल जाने वाले हैं॥
मादरे हिन्द गमगीन न हो, दुश्मन के मुकाबिल दीन न हो।
सय्याद कफस में कैद करें, हम शीश कटाने वाले हैं॥
रिषियों का खून हमारा है, आजादी एक सहारा है।
संतान बीर के बीर हैं हम औ बीर कहाने वाले हैं॥
गांधी और लाल जवाहर हैं, जो राष्ट्र कार्य में नाहर हैं।
एक नई हवा दुनियां में अब, वह नई चलाने वाले हैं॥
परवाह न कुन्ज क़फ़स की है, आज़ादी हिन्द के बस की है।
खद्दर से प्रेम बढ़ा करके, हम जुल्म हटाने वाले हैं॥
मरने में रूह को लेजाना, सब यवज चुकाना हरषाना।
थे मुल्क तुम्हारे खैरख्वाह, अब आफ़त ढाने वाले हैं॥
यां आये मुसाफिर भी बढ़के, दी जान प्रतिज्ञा पर अड़के।
शंकर परदेशी भी ऐसे, इंगलैंड को जाने वाले हैं॥

॥ न होगी तुम्हारी गुजर देख लेना ॥

बसर हिन्दके गौर कर देख लेना, उठी जो लहर देख लेना।
इशारे की उम्मीद पर हम हैं बैठे, ।
बहे खूं का दरिया नहर देख लेना ॥
कटा देंगे गर्दन अगर हो जरूरत ।
उसी वक्त सीना सिपर देख लेना ॥
जो अपने बिरादर पै है जुल्म ढाते ।
पड़े उनपे आहो असर देख लेना ॥
बतन के हैं शैदा वो आजाद होंगे ।
बहुत से हैं ऐसे बसर देख लेना ।
गुलामी वतन अब न हरगिज़ करेगा ।
फलेगा यही अब सजर देख लेना ।
सतावेगा हमको खुदी मर मि टेगा।
पड़ेगा खुदाई कहर देख लेना ॥
बना हिन्द खद्दर विदेशों को देगा ।
जरा आप भी एक नजर देख लेना ॥
उठा हिन्द से अब वो तर्ज़ों तरीका।
बहे गांव बहे शहर देख लेना ॥

चर्खे औ, कर्घे ज़रूरत ही ज्यादा।
सुबह देखना दोपहर देख लेना॥
यही लहर दरियामें आवे वो साहब।
भरा है स्वदेशी से घर देखलेना।
शंकर तुम्हें साफ़ लिखकर सुनावें।
न होगी तुम्हारी गुज़र देख लेना॥

मंदिर से भी अधिक है इस वक्त जेल जाना।
आज़ाद होगा भारत, आया है वो जमाना।
बीरों का खून तन में, है वक्त पर बहाना॥
झण्डे कि शान प्यारी, उसपे है जो निशारी।
बनना जो है बिरादर, गाते हैं ए तराना॥
गर ख़ून के हो प्यासे शमशीर लेके आवो।
है खेल हिन्दुओं को फांसी पै झूल जाना॥
यह आत्म शक्ति शक्ती से भी न मर सकेगी।
गर ज़ोर बुज़ुर्गों में कूबत दिखाके जाना॥
मक़तल में राह मेरी आज़ादी दम भरेगी।
कब हिन्द को गवांरा अब है गुलाम खाना॥
शंकर ये तमन्ना है भारत के कोने कोने।
मंदिर से भी अधिक है इस वक्त जेल खाना॥

* आज़ाद रहो *

(बहरतवील)

ख़ून दरिया प बेशक बहा जाएँगे ।

मां इज़ाज़त दो झण्डा उठाकर चलूँ,
हिन्द आज़ाद मरकर करा जाएँगे ।
आत्म शक्ती दुधारे को ले हाथ में,
पूरा प्रण अपना माता निभा जाएंगे ॥
मातु गोदी में खेले सयाने हुए,
ले गुलामी को बेशक दिखाने हुए ।
अबतो गांधीकी आज्ञा सिरो धार्य कर,
मोह माया से नाता हटा जाएंगे ॥
जो गुलाभी में सर त्यार है इस बखत,
उनको आज़ादी जाकर पढ़ाऊं सबक़ ।
बहुत से जो विरादर हैं सोते यहां,
उनको खुद अपने हाथों उठा जाएंगे ॥
मातु रोली औ चन्दन तिलक भाल हो,
भेब सत्याग्रही का भी बिकराल हो।

द्रढ़ प्रतिज्ञा से चेहरा मेरा लाल हो,
भेष ऐसा यहां से बना जांयगे ॥
मात झोले में परसाद देदो चने,
ग्रह तपस्या मेरा जेल ही अब बने।
एक वसन जोगिया शुद्ध खद्दर कहो,
बहुत बीरों को मरना सिखा जाएंगे ॥
केश लंबे स्वदेशी लगन हो लगी,
मोह माया बदन से हो मेरे भगी।
जो दुराचारी आदी नशे के बने,
सारी आदत भी उनकी छुड़ा जाएंगे ॥
पीने वाले बिरादर जो मारे मेरे,
भाग्य अपना समझ मत वहां से टरे।
या पकड़ जायेंगे या तो मर जायेंगे,
नाम तब भी यहां से कमा जाएंगे ॥
पीने वाले अगर अस्त्र घालें मेरे,
शीश हाजिर उसी भूमि पर वह मरे।
मातु रिण से उरिण हिन्द होगा तभी,
हिन्द के शेर जब सर कटा जाएंगे ॥

गर ज़रूरत पड़े खून ले लीजिये,
यवज़ आज़ादी अब हिन्द को दीजिये।
कह रहा गौर अब दिल में कर लीजिये,
वरना जेलों को शिमला बना जाएंगे ॥
कर में लेकर के झण्डा विदा हो चला,
मातु सब हिन्द का हो हमेशा भला।
जन्म भूमी हमारी इसी पर मरूं,
झण्डा हर घर में माता लगा जायेंगे ॥
देवी शंकर प्रतीक्षा हो पूरी मेरी,
जल्द आशीस दे मातु क्यों हो देरी।
जो है कब्ज़ा वतन पर हमारे किये,
मंत्र गांधी से उनको हटा जायेंगे ॥
वार गोली का हो या मशीनगने,
वीर हैं सीने मेरे रहेंगे तने।
राजी ? उन्हें शीश देदेंगे हम,
खून दरियाये बेशक बहा जाएंगे ॥

इस पुस्तक को कोई महाशय छापने या छपाने का इरादा न करें
ता० १ अगस्त सन् ३०